This question paper contains 2 printed pages. **Your Roll No. ....**

Sl. No. of Ques. Paper	: 7803	**GC**
Unique Paper Code	: **52051121**	
Name of Paper	: **हिन्दी भाषा और साहित्य 'क'**	
Name of Course	: **B.Com. (Prog.)**	
Semester	: **I**	
Duration	: **3 hours**	
Maximum Marks	: **75**	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कबीर **अथवा** मीराबाई का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

2. बिहारी **अथवा** घनानन्द की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। 10

3. जयशंकर प्रसाद **अथवा** नागार्जुन की कविता का काव्य सौष्ठव बताइए। 10

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) करता था तौ क्यूँ रह्या, अब करि क्यूँ पछताइ।
बोवै पेड़ बँबूल का, अब कहाँ तैं खाइ।।
कबीर इस संसार कौं समझाउँ कै बार,
पूँछ जू पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार।।

अथवा

हरि म्हारा जीवण प्राण अधार।।
और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूं लोक मँझार।
थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।
मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार।। 10

(ख) मरतु प्यास पिंजरा-पर्‌यां, सुआ समै कै फेर।
आदरु दै दै बोलियतु, बाइसु बलि की बेर।।
वे न इहाँ नागर बढ़ै, जिन आदर तो आब।
फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ, गँवई-गाँव गुलाब।

अथवा

रूप निधान सुजान सखी जब तें इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनआनँद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारें टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।। 10

P. T. O.

(ग) वाचक ! प्रथम सर्वत्र ही 'जय जानकी जीवन' कहो ।
फिर पूर्वजों के शील की शिक्षा-तरंगों में बहो ।
दु:ख शोक जब जो आ पड़े, सो धैर्यपूर्वक सब सहो ।
होगी सफलता क्यों नहीं कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो ।।

अथवा

हिमाद्रि तुंग शृंग से,
प्रबद्ध शुद्ध भारती ।
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती—
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है— बढ़े चलो, बढ़े चलो ।। 10

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) आधुनिक भारतीय भाषाएँ

(ख) हिन्दी भाषा का सामान्य परिचय

(ग) भक्तिकालीन संत काव्य

(घ) रीतिमुक्त काव्य

(ङ) भारतेन्दुयुगीन प्रवृत्तियाँ । 5×3=15